Course --- B.A,(Education),part -- 3

Paper -- 7th, Educational thought & practice & Adult Education

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic --- Educational Philosophy of Ravindra Nath Tagore

---

## रविन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन

**(1)प्रस्तावना -- रविंद्र नाथ टैगोर एक महान शिक्षा दार्शनिक थे ।उन्होंने भारतीय दर्शन ,उपनिषद ,नक्षत्र शास्त्र तथा संस्कृत की शिक्षा ली थी। 16 वर्ष की आयु में कानून पढ़ने विलायत गए थे लेकिन उसमें रुचि न होने के कारण वे लौट गए ।उन्होंने 1919 में घटित जालियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध स्वरूप अंग्रेज सरकार द्वारा दी गई नाइटहुड की उपाधि वापस कर दी ।वह महान दार्शनिक ,कलाकार, शिक्षा शास्त्री तथा कर्म योगी थे ।उनको साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से भी नवाजा गया था।**

**(2)शिक्षा दर्शन --- रवीना टैगोर एक महान शिक्षा शास्त्री थे ।विश्व भारती के निर्माण के साथ वे व्यवहारिक शिक्षा शास्त्री बनकर संसार के सामने उभरे ।उनका शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन पर आधारित है। टैगोर को प्रकृतिवादी माना जाता है। वह प्रकृति को महान अध्यापक मानते थे ।उनके अनुसार ईश्वर प्रकृति के विभिन्न रूप में अपने को अभिव्यक्त करता है। इसलिए टैगोर के अनुसार व्यक्ति का प्रकृति के साथ संबंध होना चाहिए।**

**(3)शिक्षा का अर्थ -टैगोर के अनुसार शिक्षा एक सुधारक एवं व्यापक प्रक्रिया है। जो व्यक्ति के उत्तम गुणों को विकसित करती है ।सच्चे ज्ञान से आत्मा प्रकाशित एवं आत्मानुभूति उत्पन्न होती है ।टैगोर के अनुसार शिक्षा से जीवन में साहसिक कार्य करने का का भाव आता है तथा उनके अंदर मानसिक शक्ति की स्वस्थ एवं प्राकृतिक अभिव्यक्ति होती है। शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व का अधिकतम विकास करती है ।उनकी दृष्टि में शिक्षा पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मानव योग्यताओं का सर्वांगीण विकास है। उन्होंने शिक्षा को समन्वय के रूप में भी देखते थे।**

(4)शिक्षा के उद्देश्य -- टैगोर के अनुसार मुख्य उद्देश्य निम्नवत है ---

१)टैगोर ने शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने पर बहुत अधिक जोर दिया है अतः उनकी दृष्टि में शिक्षा का एक उद्देश्य शारीरिक विकास भी है ।

२) टैगोर बौद्धिक विकास पर भी जोर देते थे बौद्धिक विकास का अर्थ कल्पना ,स्वतंत्र चिंतन, सतत जिज्ञासा तथा मन की चेतना का विकास है। पुस्तकशिक्षा के विरोधी और स्वतंत्र चिंतन के समर्थक थे।

३) टैगोर के अनुसार शिक्षा का तीसरा उद्देश्य नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास है ।उन्होंने नैतिक शिक्षा में संकल्प शक्ति, चरित्र विकास ,आंतरिक स्वतंत्रता तथा आत्मप्रकाश के विकास पर बल दिए थे।

४) टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य समरूप विकास यानी शारीरिक ,बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक सभी पक्ष का समान रूप से विकास को ही समरूप विकास का नाम दिए थे ।

५) उपयोगितावादी उद्देश्य की भी बात टैगोर के द्वारा की गई थी ।उनके अनुसार शिक्षा को हमें दैनिक समस्याओं का समाधान करने के योग्य बनाना चाहिए ।यह हमारे आर्थिक जीवन तथा हमारी आवश्यकता के अनुकूल होना चाहिए।

६) टैगोर अंतरराष्ट्रीय संकल्प तथा अंतरराष्ट्रीय एकता के समर्थक थे ।वह समस्त विश्व को एक परिवार के रूप में देखते थे ।शिक्षा द्वारा व्यक्ति को संसार के अन्य व्यक्तियों के साथ एकता का अनुभव होना चाहिए ।उनके अनुसार शिक्षा को अंतरराष्ट्रीय विवेक के विकास तथा विश्व बंधुत्व की भावना को अपनाना चाहिए।

७)टैगोर व्यक्ति और समाज में समन्वय की समर्थक थे उनका मानना था कि दूसरों के साथ मिलकर रहने से ही आत्मानुभूति की प्राप्ति हो सकती है !समाज अनुभूति का साधन है, जैसे व्यक्ति का संपूर्ण विकास समाज में ही संभव है उसी तरह एक देश दूसरे देश से संबंध स्थापित करके अपना विकास कर सकता है!

(5) पाठ्यक्रम ---टैगोर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए व्यापक पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर बल दिए थे ।उनके अनुसार पाठ्यक्रम इतना व्यापक होना चाहिए कि उससे बच्चे का बौद्धिक, सामाजिक- ,आर्थिक, नैतिक, आध्यात्मिक यानी सभी प्रकार का विकास हो सके ।उन्होंने बच्चों के विकास में पाठ्यक्रम सहायकों के महत्व को भी स्वीकार किया ।उनके अनुसार पाठ्यक्रम सामाजिक आवश्यकता के अनुकूल, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ताकि भावना विकसित करने वाला तथा दैनिक जीवन की आवश्यकता को पूरा करने वाला होना चाहिए ।उन्होंने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को सम्मिलित किया :---

१) विषय --

## भाषा एवं साहित्य ,मातृभाषा,अंग्रेजी और अन्य
विदेशी भाषाएं रूसी ,जर्मन इत्यादि ।

## प्राकृतिक विज्ञान -- भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान,
वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान ,सामान्य विज्ञान इत्यादि

## गणित

## सामाजिक विज्ञान इतिहास भूगोल नागरिक शास्त्र

## कृषि एवं तकनीकी

## धर्म-,दर्शन ,मनोविज्ञान, नृत्य ,कला इत्यादि।

२)क्रियाएं एवं काम धंधे :-

## नृत्य ,नाट्य मंचन, संगीत

## खेल ,ड्राइंग ,चित्रकला,भ्रमण, क्षेत्रीय अध्ययन

## कृषि एवं बागवानी, प्रयोगशाला कार्य, समाज सेवा
तथा स्वतंत्र शासन

३) सामुदायिक सेवा :--- व्यक्ति का जीवन क्रियात्मक एवं स्फूर्ति पूर्ण होने चाहिए ।प्रत्येक व्यक्ति को समुदाय कार्यों में अपना समय देना चाहिए ।उनको समय के अनुसार समुदाय की आवश्यकता तथा जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेने चाहिए ताकि व्यक्ति के रूप में उनकी सामाजिक महत्व बढ़ सके ।

(6)शिक्षण विधियां :----

१) टैगोर के अनुसार 'भ्रमण द्वारा शिक्षण 'सर्वोत्तम विधि है उनका विश्वास है कि भ्रमण तथा यात्राओं से इतिहास भूगोल तथा अन्य सामाजिक विषयों को अच्छी प्रकार पढ़ाया जा सकता है ।भाषा के लिए भी यह प्रभावी है।

२) तर्क एवं विचार विमर्श विधि:-- टैगोर ने इस विधि का भी समर्थन किया है उनके अनुसार विद्यार्थियों में तर्क एवं विचार द्वारा समस्या समाधान के लिए प्रेरित करना चाहिए।

३)हुरिस्टिक विधि -- इस विधि के टैगोर समर्थक थे ।इस विधि में विद्यार्थी प्रश्न करता है और अध्यापक उन्हें अपने उतरों से संतुष्ट करता है बाद में अध्यापक विद्यार्थियों के बुद्धि परीक्षण के लिए उनसे प्रश्न करता है। इसे खोज विधि भी कहते हैं।

४)क्रियाविधि -- टैगोर का विश्वास है कि शरीर और मन की शिक्षा के लिए क्रिया बहुत आवश्यक है। उनकी दृष्टि में  उछलना,कूदना ,पेड़ पर चढ़ना ,फल तोड़ना तथा तालियां बजाना सीखने सिखाने की महत्वपूर्ण विधियां है।

(7)अनुशासन -- टैगोर कठोर अनुशासन के समर्थक नहीं थे ।उनके मन में बच्चों के लिए अत्याधिक सहानुभूति थी ।उनका विश्वास था बच्चों को अधिकारियों द्वारा या शिक्षकों द्वारा दबाया नहीं जाना चाहिए ।उन्होंने बच्चों को स्कूल में अधिक से अधिक स्वतंत्रता देने के पक्ष थे ।उनके अनुसार मानसिक स्वतंत्रता ही शिक्षा का लक्ष्य है ।टैगोर के अनुसार स्वतंत्रता बच्चों की प्रकृति है परंतु उसका मन नियंत्रण तथा अनुशासन भी स्वीकार करने को तैयार रहता है।

(8)शिक्षकों की भूमिका --- टैगोर ने शिक्षकों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किए थे ।उनका मानना था कि शिक्षकों को विद्यार्थियों का निर्देशन करना चाहिए तथा उन्हें प्रेरित करना चाहिए ।उन्हें ठीक मार्ग पर चलने के लिए रास्ता दिखाना चाहिए ।उसमें बच्चों की भावनाओं ,प्रवृत्तियों को समझने की योग्यता होनी चाहिए। टैगोर के अनुसार शिक्षकों का व्यवहार  सहानुभूति पूर्ण होना चाहिए ।शिक्षकों को पुराने तत्वों को विद्यार्थी के मन में भरकर उनके  विकास को अवरुद्ध नहीं करना चाहिए ।उसे स्वयं हमेशा सीखने के लिए प्रेरित करनी चाहिए।

(9) स्त्री शिक्षा -- टैगोर स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। वे चाहते थे कि शिक्षा के क्षेत्र में पुरुष एवं स्त्री लड़के तथा  लड़कियों में कोई भेद नहीं होनी चाहिए। अपनी इसी सोच के तहत 1908 ईसवी में उन्होंने शांति निकेतन में स्त्री शिक्षा विभाग की स्थापना की। 1922 ईस्वी में स्त्री भवन की स्थापना की गई ।इसके अतिरिक्त गृहविज्ञान ,सिलाई ,कटाई और नृत्य के शिक्षण की व्यवस्था भी की गई। टैगोर का विश्वास था कि लड़कियों के लिए संगीत का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। अतः उनके लिए संगीत शिक्षण की व्यवस्था की थी।

(10) जन या सार्वभौमिक शिक्षा ---  टैगोर शिक्षा के महत्व को भलीभांति समझते थे ।वह अनुभव किए थे कि अशिक्षा के कारण लोगों को बहुत सारी परेशानियां उठानी पड़ती है ।इसलिए उन्होंने जन शिक्षा  की वकालत की थी ।उनके अनुसार प्राथमिक स्तर तक शिक्षा निशुल्क होना चाहिए ।प्रौढ़  शिक्षा के लिए वे रात्रि स्कूल स्थापित करने के पक्ष में थे ।वे चाहते थे कि महंगे स्कूल उपकरण तथा उपस्कर पर बल नहीं

देना चाहिए ।शैक्षिक दायित्व के प्रति राज्य को कार्य करना चाहिए। शिक्षा का विदेशी माध्यम नहीं होना चाहिए। लोगों को राज्य की सहायता पर ज्यादा भरोसा नहीं करनी चाहिए इत्यादि।

टैगोर के द्वारा भारत मैं विश्व को मानवता का संदेश दिया है। साहित्य ,दर्शन ,शिक्षा ,कला के क्षेत्र में उनकी देन महत्वपूर्ण है। इन्हीं क्षेत्रों में उन्होंने बल दिया है ।यह मानवता व मानवता के शुद्ध रूप बच्चों से बहुत प्यार करते थे ।बच्चों को उन्होंने आदर, प्रेम ,स्वतंत्रता तथा सहानुभूति का क्षेत्र प्रदान किया। विश्व बंधुत्व पर भी जोड़ देते थे ।उन्होंने पूर्व एवं पश्चिम को एक दूसरे के निकट लाने का प्रयत्न किया। उनके शिक्षा दर्शन  भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शिक्षा संबंधित बुराइयों को दूर करने के संबंध में महत्वपूर्ण कार्य किए।